संस्थाध्यक्षों हेतु स्वः अधिगम सामग्री

मॉड्यूल का क्षेत्र–साझेदारियों का नेतृत्व

National Institute of Educational Planning and Administration (Deemed to be University)
National Centre for School Leadership

विद्यालय के समग्र विकास में समुदाय के सहयोग से संस्थाध्यक्ष का नेतृत्व

स्कूल लीडरशिप एकेडमी, राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान (सीमैट) उत्तराखण्ड, देहरादून

विद्यालय के समग्र विकास में समुदाय के सहयोग हेतु संस्थाध्यक्ष का नेतृत्व–

की वर्ड– भौतिक वातावरण, आर.टी.ई., शैक्षिक वातावरण, आंगनबाड़ी

उद्देश्य–

1–विद्यालय के भौतिक एंव मानवीय संसाधनों के प्रयोग से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करना।

2–विद्यालय को एक बेहतर संस्था के रूप में विकसित करना।

3–छात्र–छात्राओं के नामांकन में वृद्धि करना।

4–सेवित क्षेत्र के अभिभावकों का सहयोग प्राप्त करना।

5–विद्यालयगतिविधियों में अभिभावकों की सहभागिता सुनिश्चित करना।

पृष्टभूमि/प्रस्तावना–राजकीय प्राथमिक विद्यालय लमगड़ा वि0ख0 लमगड़ा जनपद–अल्मोड़ा के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है। जहॉ पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के माता–पिता आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग से आते हैं जिनकी आय का स्रोत मजदूरी अथवा कृषि कार्य है। अभिभावक बच्चों के प्रति अधिक जागरूक नहीं थे। परिणाम स्वरूप बच्चों का बौद्धिक स्तर औसत था।

लमगड़ा विकास खण्ड का मुख्यालय है जहॉ बैंक, इण्टर–कॉलेज, पॉलीटैकनिक संस्थान, ट्रैजरी, पुलिस थाना, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र आदि संस्थाएं व अनेक व्यावसायिक उपक्रम हैं। इस कारण यह क्षेत्र शहरीकरण के रूप में विकसित हो रहा है। प्राथमिक शिक्षा लिए यहॉ लगभग 01 किमी0 के अन्तर्गत 03 राजकीय विद्यालयतथा 03 निजी विद्यालयसंचालित हैं। विद्यालय के सेवित क्षेत्र में बाल गणना के अनुसार 6–11 आयु वर्ग के 34 बच्चे हैं परन्तु आस–पास के अन्य क्षेत्रों के लोग यहॉ रोजगार के लिए आकर बसे है।

निजी विद्यालयों का आकर्षण एवं इन संस्थाओं में 25 प्रतिशत सीटें शिक्षा के अधिकार(आर0टी0ई0) में प्रवेश के कारण राजकीय विद्यालयों में प्रवेश बहुत कम होने लगे हैं। जिस कारण वर्ष–2016–17 में छात्र संख्या मात्र 26 रह गयी। जो कि एक गम्भीर चिन्ता का विषय था।

विद्यालय नेतृत्व के अन्तर्गत प्रधानाध्यापिका के द्वारा किये गये कार्यों का विवरण– विद्यालयमें घटती छात्र संख्या को बढाने के निम्नलिखित स्प से प्रयास किये गये–

1– भौतिक वातावरण का निर्माण–प्रारम्भ में जब प्रधानाध्यापिका के द्वारा विद्यालय में कार्यभार ग्रहण किया गया था उस समय विद्यालय की भौतिक दशा बहुत अच्छी नहीं थी । विद्यालयकी छत,फर्श एवं दीवारों की मरम्मत की गयी। उक्त कार्य विद्यालय विकास अनुदान एवं स्वयं की धनराशि को व्यय करके की गयी। विद्यालय भवन को आकर्षक बनाने हेतु उप शिक्षा अधिकारी लमगड़ा के सहयोग से विद्यालय में रूपान्तरण का कार्य किया गया। जिसके अन्तर्गत कक्षा कक्षों में शैक्षिक गतिविधियों से सम्बन्धित शैक्षिक सामग्री को अधिगम सामग्री के रूप में बनाया गया। विद्यालय के बाहरी दीवारों में भी आकर्षक पेन्टिंग एवं शैक्षिक पोस्टर बनाकर विद्यालय भवन को विकसित किया गया। कक्षा कक्षों में सभी बच्चों के लिए आकर्षक फर्नीचर की व्यवस्था की गयी, फर्श में मैटिंग करवायी गयी। साथ ही कक्षा कक्षों में पर्याप्त रोशनी की व्यवस्था तथा खिड़की दरवाजों पर पर्दे लगाकर कक्षा कक्षों को सुसज्जित किया गया।

विद्यालय के पूर्व छात्र (श्री किशन सिंह जी द्वारा) विद्यालय को एक स्मार्ट बोर्ड प्रदान किया गया। जिससे विद्यालय में स्मार्ट कक्षा का संचालन किया गया। जिससे बच्चों द्वारा पाठ्यक्रम सम्बन्धी तथा अन्य जानकारियॉ बड़ी ही मनोंरंजक तरीके से सिखाई जाती हैं।

विद्यालय के परिसर को अच्छा बनाने के लिए चारों ओर क्यारियों का निर्माण किया गया जिनमें फूलों के पौधे लगाकर विकसित किया गया, तथा विद्यालय सौन्दर्यीकरण के लिए लोहे के स्टैण्ड बनाये गये तथा स्वच्छता सम्बन्धी बाते लिखवायी गयी।

2– शैक्षिक वातावरण का निर्माण हेतु किये गये प्रयास–

(1) विद्यालय में संचालित मिनी आंगनबाड़ी के सहयोग से नर्सरी कक्षाओं के रूप में विकसित किया गया। जिससे कि विद्यालयमे आर्थिक रूप से सम्पन्न परिवारों से भी बचचों का प्रवेश होने लगा।

(2) गतिविधि आधारित शिक्षण द्वारा रोचक शिक्षण की व्यवस्था की गयी जिसे बच्चों द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग किया गया ।

3–अंग्रेजी शिक्षण की ओर अधिक ध्यान दिया गया, था आंगनबाड़ी से ही बच्चों को अंग्रेजी शिक्षण की ओर विशेष ध्यान दिया गया जिसके फलस्वरूव वर्ष 2017–18 में विद्यालय के एक छात्र नौशाद के द्वारा जनपद में प्रथम तीन स्थान में सर्वोच्च रहकर राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया गया।

4– विद्यालय की छात्र संख्या में 26 से बढ़कर 32 हो गयी। विद्यालय प्रबन्धन समिति के सहयोग से विद्यालय में एक सामुदायिक शिक्षक की व्यवस्था की गयी ।

5– पाठ्यक्रम को सरल बनाने के लिए अधिक से अधिक शिक्षण अधिगम सामग्री(टी0एल0एम0) का विकास किया गया जिससे बच्चे रोचक ढंग से सीखकर बच्चे स्वंय ही विभिन्न संबोधों का प्रतुतीकरण

करने लगे।

6–बच्चों हेतु आकर्षक पुस्तकालय एवं वाचनालय कक्ष को विकसित किया गया । जिससे बच्चों में पढ़ने की आदत का विकास होने लगा।

7–निःशुल्क गणवेश में बच्चों के लिए आकर्षक गणवेश तैयार करवाया गया। यथा (पैंन्ट, कमीज, टाई, बैल्ट ,तथा कोट (ब्लेजर) तथा ट्रेक सूट)

8– 1 से 3 किमी0 दूर से आने वाले बच्चे जो नियमित रूप से विद्यालयनहीं आ पा रहे थे उनके लिए एस्कॉर्ट की व्यवस्था की गयी जिससे वे सभी नियमित रूप से विद्यालयमें आने लगे तथा उनके शैक्षिक स्तर में भी सुधार होने लगा।

9–कोविड काल के उपरान्त बच्चों के लर्निग गैप को पूरा करने के लिए हिन्दी/अंग्रेजी एवं गणित विषयों पर विशेष ध्यान दिया गया जिसके परिणामस्वरूप मैथ्स विजार्ड एवं इंग्लिय स्पैलिंग, जीनियस कॉम्पीटीसन में विद्यालय के 02 छात्र रौनक टम्टा एंव अलीशा द्वारा विकास खण्ड से चयन के उपरान्त जिला स्तरीय प्रतियोगिता मं प्रतिभाग किया गया।

चिन्तन प्रश्न– विद्यालय के समग्र विकास में संस्थाध्यक्ष के रूप में आपकी भूमिका कैसी होगी

.....

3– समुदाय को क्रियाशील करने हेतु किये गये प्रयास–प्रायः देखा गया कि एस0एम0सी0 बैठकों में अभिभावकों की प्रतिभागिता कम रहती थी। इस कारण प्रधानाध्यापिका के द्वारा निम्नलिखित प्रयास किये गये–

(1) विद्यालयकी सुविधाएं एवं अन्य जानकारियॉ को अभिभावकों तक पम्पलेट तैयार कर प्रेषित किये गये।

(2) स्कूल चलो अभियान के अन्तर्गत सेवित क्षेत्र में जाकर नियमित बैठकों का आयोजन किया गया। तथा अभिभावकों को विद्यालयके प्रति जागरूक किया गया।

(3) प्रवेश लेने वाले बच्चों को प्रधानाध्यापिका की ओर से निःशुल्क स्टेशनरी एवं बैग प्रदान किये गये।

(4) कोविड काल में घर में ही स्थानीय पढे लिखे युवक/युवतियों के माध्यम से शिक्षण व्यवस्था की गयी ताकि बच्चे पढ़ाई से दूर न होने पायें।साथ ही उनकी ऑन लाईन शिक्षण की व्यवस्था की गयी एवं वर्क शीट के माध्यम से भी बच्चों तक पहुॅच बनाने का सफल प्रयास किया गया।

चिन्तन प्रश्न– संस्थाध्यक्ष/नेतृत्वकर्ता के रूप में आप समुदाय का सहयोग कैसे प्राप्त करेंगे?

4– बच्चों मं चारित्रिक तथा नैतिक गुणों के विकास हेतु किये गये प्रयास– प्रायः देखा गया है कि बच्चों में कुछ गलत आदतें भी पायी जाती हैं अतः इन्हें दूर करने के लिए विद्यालयमं नियमित आनन्दम कक्षाओं का आयोजन किया गया। जिसमें बच्चें नैतिक कहानियॉ/विचार सुनकर प्रेरित होने लगे। साथ ही अच्छे कार्य करने पर प्रोत्साहन हेतु पुरस्कार दिया गया। जिससे बच्चे अच्छे कार्य की ओर प्रेरित होने लगे। प्रधानाध्यापिका के उपरोक्त प्रयासों के द्वारा विद्यालय में छात्र संख्या में भी वृद्धि हुई परिणास्वरूप छात्र संख्या 30 से बढ़कर 41 हो गयी।

चिन्तन प्रश्न– नेतृत्वकर्ता के रूप में आपके पास अपने विद्यालय की छात्र संख्या वृद्धि की योजना क्या है

चिन्तन प्रश्न– नेतृत्वकर्ता के रूप में आप अपने विद्यालय की समग्र विकास योजना का निर्माण करते समय किन–किन घटकों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहेंगें